CCI NG 3.7 Product: HelloDelhiBS PubDate: 03-04-2026 Zone: HelloDelhi Edition: 1 Page: HDFP User: cci Time: 04-02-2026 15:56 Color:

महाकाल के दरबार पहुंचे अक्षय कुमार

देखें अंदर

नवभारत टाइम्स NBT

Delhi Times OF INDIA

masala mix

FRIDAY, APRIL 3, 2026
ADVERTORIAL, ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE

शाहिद और कृति की फिल्म में होगी जाह्नवी की एंट्री!

देखें अंदर

टॉम हॉलैंड से शादी पर ज़ैंडेया ने तोड़ी चुप्पी

जैंडेया के मुताबिक, वह टॉम हॉलैंड के साथ वह बेहद कम्फर्टेबल और शांति महसूस करती हैं।

जैंडेया और टॉम हॉलैंड की गुपचुप शादी की खबरें कुछ दिनों पहले आई थीं। हालांकि उसके बाद से जैंडेया लगातार इंटरव्यू दे रही हैं लेकिन अपनी शादी पर बात नहीं करतीं। उन्होंने ना तो शादी को कन्फर्म किया है और ना मना किया। अब उन्होंने इसकी वजह बताई है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि मेरे निजी रिश्तों में लोगों की दिलचस्पी की एक सीमा होनी चाहिए। मुझे पता है कि मैं और टॉम पब्लिक पर्सनैलिटी हैं, हम दोनों ही दुनिया के सामने बड़े हुए, इसलिए मैं समझती हूं कि लोगों को हमारी निजी जिंदगी में दिलचस्पी क्यों है। इसलिए मैं उन्हें खारिज भी नहीं करना चाहती कि आप लोग मेरे मामले में मत बोलो।'

उन्होंने आगे कहा, 'मेरे लिए अपनी कुछ सीमाएं हैं कि मैं किन चीजों के बारे में बात करना चाहती हूं, किन्हें दुनिया के सामने लाना चाहती हूं। लेकिन कुछ चीजें हैं जो मैं सबसे शेयर करना चाहती हूं। मैं इसमें संतुलन ढूंढने की कोशिश करती हूं।' बकौल जैंडेया, 'कई मामलों में मैं बहुत रिजर्व किस्म की इंसान हूं और इसलिए कुछ चीजें मैं अपने और उस (टॉम हॉलैंड) तक रखने की कोशिश करती हूं।'

जैंडेया ने कहा, 'मुझे पता है कि टॉम मेरे लिए परफेक्ट है क्योंकि मैं उसके साथ बिल्कुल नर्वस महसूस नहीं करती। उसके साथ मैं बहुत शांत होती हूं।

मीडिया और दर्शक दोनों ही बिज़ी रहे स्टार्स को सेलिब्रेट करने में। उनको फर्क नहीं पड़ता है कि एक बहुत ही टैलेंटेड नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी अपने करियर में 15 साल लेट हो गया। किसी को भी फर्क नहीं पड़ता है कि एक पंकज त्रिपाठी लेट हो गया। बहुत बाद में जाकर उसको वह मान्यता मिली।

फिल्में जो अच्छा कर रही हैं, उनकी परफॉर्मेंस पर कोई बात ही नहीं कर रहा है या डायरेक्टर के ब्रिलियंट क्राफ्ट पर कोई बात ही नहीं कर रहा है। हम बात क्या करते हैं कि आज 100 करोड़ पार कर गया।

'हमारे यहां कभी हुनर की कदर नहीं की जाती'

Lokesh Kashyap

मनोज बाजपेयी

अंशुल चतुर्वेदी

मनोज बाजपेयी बीते दिनों इंटरनैशनल फिल्म फेस्टिवल दिल्ली के एक सेशन में शामिल हुए, तो पुराने दिनों को भी याद किया, जब 18 साल की उम्र में वह बिहार के अपने गांव से ऐक्टिंग सीखने के लिए दिल्ली आए थे। वह संघर्ष, अनिश्चितता और उस इंडस्ट्री में 32 साल लंबा समय बिताना, जिसके बारे में वह सोचते थे कि यहां पर स्टार्स को ही तवज्जो मिलती है। उनका मानना है कि यह इंडस्ट्री, साथ ही मीडिया और दर्शक भी फिल्म स्टार्स के पीछे पागल हैं और कई टैलेंटेड ऐक्टर्स को समय पर उनका हक नहीं देते। यह बात वह किसी पछतावे में नहीं, बल्कि गुस्से में कहते हैं। यह गुस्सा उन सालों के खो जाने का है, जो कलाकार को पहचान मिलने से पहले ही गुम हो जाते हैं। यह गुस्सा उस रुतबे और पैसे में अंतर का भी है, जिसे वह सेकंड क्लास सिटीजन कहते हैं। यह गुस्सा फिल्मों और ऐक्टर्स को बॉक्स ऑफिस नंबरों के आधार पर आंकने का भी है। यहां पेश है मनोज से खास बातचीत:

2012 में जब आप गैंग्स ऑफ वासेपुर के प्रीमियर के लिए Cannes में थे, तब आपने कहा था कि इंडियन मीडिया हमारी बात नहीं करता। आज का मीडिया बात करता है कि स्टार्स ने कौन से कपड़े पहने हैं। आप और नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी कह रहे थे कि जो मुकाम स्टार किड्स को अपनी पहली फिल्म से मिल जाता है, जैसे कि करोड़ों की फिल्में और पीछे भागते प्रोड्यूसर्स, आप वहां कई सालों बाद भी नहीं पहुंच पाते। मैंने आपसे पूछा था कि आपको नहीं लगता समय आपके हाथ से निकला जा रहा है! इस पर आपने कुछ ऐसा कहा था जो मेरे जेहन में रह गया। आपने कहा था, *'बड़ी लंबी लड़ाई है हमारे लिए। खुद से भी होती है, पूरा सिस्टम लड़ रहा होता है। या तो खाने को लेकर जद्दोजहद है या जो लोगों की सोच बन जाती है हमारे बारे में, उसको लेकर जद्दोजहद है। हम अपनी जगह बनाना चाहते हैं, उसकी जद्दोजहद है। हमारी एनर्जी बहुत सी इन लड़ाइयों में चली जाती है, जो क्रिएटिविटी में इस्तेमाल होनी चाहिए थी। आखिर में जब तक लोग आपको सही तरह से इस्तेमाल करना चाहते हैं, तब तक बड़ी देर हो चुकी होती है। जैसे मैं बड़ा जुनूनी हूं। बहुत से बेहतरीन फिल्म निर्माता हैं जिनके साथ मैं काम करना चाहता हूं। लेकिन मुझे लगता है, मेरा समय निकला जा रहा है, जल्दी करो, जल्दी करो... ये समय क्यों निकला? क्योंकि हम बिना मतलब की जद्दोजहद में फंसे रह गए।'*

मैं यह बात बहुत गर्व के साथ कहता हूं कि मुझे बहुत सारी फिल्में, बड़ी फिल्में मिलीं, लेकिन मैंने उन्हें मना कर दिया क्योंकि वे सेकेंडरी रोल्स (सहायक भूमिकाएं) करने वालों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा बर्ताव करते थे।

अब आप उस बारे में क्या सोचते हैं?

अब बहुत सारी चीजें शारीरिक रूप से संभव नहीं हैं। मानसिक रूप से थका देने वाले रोल अब मैं नहीं कर पाता हूं। डर लगता है कि मैं उनको ठीक से निभा पाऊंगा या नहीं। कनु बहल हिंदुस्तान का पहुंचा हुआ फिल्ममेकर है। ज्यादा लोग उसको तवज्जो नहीं देते क्योंकि उसने 1000 करोड़ रुपए की फिल्म नहीं बनाई है। लेकिन उस जैनरेशन में बहुत ही शानदार, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का जिसे कहें, वह डायरेक्टर है कनु बहल। उसके साथ मैंने फिल्म डिस्पैच (2024) की थी। उसके बाद, वह मेरे पास एक और कहानी लेकर आया, लेकिन मैंने उससे कहा, 'कनु, काश कि मैं 30-40 की उम्र में होता, तो तेरी फिल्म जरूर करता। क्योंकि कनु का अपना एक प्रोसेस है जिसमें आदमी बहुत थक जाता है, मेंटली और फिजिकली। बहुत डिमांडिंग होती है उसकी डायरेक्शन। मुझे अफसोस इस बात का है कि मैं उस उम्र में नहीं हूं कि मैं कनु बहल की फिल्म कर पाऊं। लेट इसेंशियल हुआ और बहुत लेट हुआ है।

CONTINUED ON > 3

बिंदास BOL

साउथ की फिल्में क्यों बॉलिवुड के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं?

अपने विचार आप 200 शब्दों में भेज सकते हैं। चुनिंदा जवाबों को हम प्रकाशित करेंगे।

जवाब भेजने के लिए QR कोड को स्कैन करें या 8447783400 पर वॉट्सऐप करें। जवाब dtmmresponse@timesofindia.com पर ईमेल भी कर सकते हैं। साथ में अपना नाम और Bindas लिखें।

पिछले सवाल का जवाब पेज 2 पर

Buzzstop

गुरू रंधावा के यूट्यूब विडियोज़ ने बनाया रेकॉर्ड

गुरु रंधावा पंजाब ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में फेमस हैं। उनकी दुनियाभर में अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है और उनके गानों पर देश-विदेश में लोग झूमते हैं। अब उन्होंने एक नया रेकॉर्ड अपने नाम किया है। उनके यूट्यूब विडियोज पर 19.8 बिलियन व्यूज हो गए हैं। वहीं वॉच टाइम की बात करें तो यह भी 108.9 मिलियन घंटे का है। गौरतलब है कि गुरु रंधावा ने कई हिट पंजाबी गाने दिए हैं जिनमें पटोला, हाई रेटेड गबरू, नाच मेरी रानी, इशारे तेरे, पटोला, हुस्न ईरानी और पागल जैसे शामिल हैं। वहीं उन्होंने कई फिल्मों में भी गाने गाए हैं जिनमें हिंदी मीडियम का गाना सूट सूट, सन ऑफ सरदार 2 का गाना पॉं-पॉं शामिल है।

आप लोगों को नीचे गिराकर ऊंचाई नहीं पा सकते: राधिका

@radhikkamadan

राधिका मदान ने हाल ही में फिल्म इंडस्ट्री में बढ़ रहे नेगेटिव पब्लिसिटी के ट्रेंड पर बात की। उन्होंने कहा कि वह कभी नहीं चाहेंगी कि वह किसी कलाकार के खिलाफ नेगेटिव पब्लिसिटी करें। राधिका ने कहा, 'मैं नहीं चाहती कि कभी मेरे पास इतना समय हो कि मैं किसी की नेगेटिव पब्लिसिटी करूं। मुझे सच में यह लगता है कि आप कभी किसी को नीचे गिराकर ऊंचाई पर नहीं पहुंच सकते। आप खुद कड़ी मेहनत करें, ईमानदारी से अपना काम करें और फिर आगे बढ़ें।' राधिका ने कहा कि ऊंचाई पर सिर्फ एक सितारे की जगह नहीं है बल्कि कई सितारे वहां अपनी जगह बना सकते हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि ऊंचाई पर सिर्फ एक सितारे के लिए जगह है। वहां बहुत सारे सितारे हैं। मैं हमेशा ऐसी रही हूं जो लोगों को ऊपर उठाए।'

आप चाहे कुछ भी कर लें, ऐसे कुछ लोग हमेशा रहेंगे जो उसे पसंद करेंगे और कुछ रहेंगे जो नहीं पसंद करेंगे।

Prathamesh Bandekar

रोहित शेट्टी की टीम ने निजी कारों पर पुलिस स्टिकर के प्रयोग पर दी सफाई

हाल ही में रोहित शेट्टी पर आरोप लगा था कि वह अपनी दो निजी गाड़ियों पर पुलिस स्टिकर और फ्लैशिंग लाइट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं जिस वजह से पुलिस एक्शन भी हो सकता है। विवाद बढ़ता देख रोहित की टीम ने इस पर बयान जारी कर अपनी सफाई दी है। रोहित शेट्टी के प्रवक्ता का कहना है कि इस साल रोहित शेट्टी के घर हुए हमले के बाद यह पुलिस स्टिकर सुरक्षा के लिए लगाए गए थे। मगर अब यह हटा लिए गए हैं। उन्होंने कहा, 'रोहित शेट्टी के घर हुए हमले के बाद, पुलिस ने सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाए थे और प्रोटेक्शन की व्यवस्था की थी। पुलिस स्टिकर्स शुरुआती दिनों में लगाए गए थे जो अब हटा दिए हैं।'

रोहित शेट्टी की टीम ने कन्फर्म किया है कि उन्हें अभी भी पुलिस सुरक्षा मिली हुई है। उनकी सुरक्षा में फिलहाल दो पुलिसकर्मी तैनात हैं क्योंकि मामले की जांच हो रही है। साथ ही उन्होंने पुलिस का भी शुक्रिया अदा किया। प्रवक्ता ने कहा, 'फिलहाल रोहित शेट्टी अभी भी पुलिस की सुरक्षा में हैं। हम इस चुनौतीपूर्ण समय में सहयोग के लिए मुंबई पुलिस का धन्यवाद अदा करते हैं।'

रोहित के घर हमले के बाद पुलिस ने सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाए थे। पुलिस स्टिकर्स शुरुआती दिनों में लगाए गए थे जो अब हटा दिए हैं।

जनवरी में हुआ था घर पर हमला

इस साल 31 जनवरी को रोहित शेट्टी के जुहू स्थित अपार्टमेंट पर अज्ञात बंदूकधारियों ने हमला किया था। इसके बाद रोहित शेट्टी के घर की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। बाद में लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने इस हमले की जिम्मेदारी ली थी। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है और कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है।

CCI NG 3.7 Product: HelloDelhiBS PubDate: 03-04-2026 Zone: HelloDelhi Edition: 1 Page: HDDPRD User: cci Time: 04-02-2026 15:54 Color:

जूलरी का सिंगल पीस ही अपने आप में काफी

पारंपरिक आभूषणों की शाही वापसी का दौर

सरोज धूलिया

आज के फैशन वर्ल्ड में जहां एक तरफ मिनिमलिज्म का बोलबाला है, वहीं दूसरी ओर 'हेरिटेज और स्टेटमेंट जूलरी' रॉयल डिजाइनों के साथ वापसी कर रही है। दिलचस्प बात यह है कि यह ट्रेंड सिर्फ ट्रेडिशनल लुक तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मॉडर्न स्टाइल में भी खूबसूरती से घुल-मिल गया है। जेनेलिया डी'सूजा के लेयर्ड चोकर, भूमि पेडनेकर के हेरिटेज टेंपल नेकलेस और शिल्पा शेट्टी के स्लीक मिनिमल चोकर, तीनों लुक्स मिलकर इस बात को साबित करते हैं कि जूलरी अब केवल सजावट नहीं, बल्कि स्टाइल स्टेटमेंट बन चुकी है।

हेरिटेज और स्टेटमेंट जूलरी क्या है?

हेरिटेज जूलरी वह होती है, जिसमें परंपरागत कारीगरी, एंटीक फिनिश और डिटेलिंग का खास महत्व होता है। इसमें कुंदन, पोल्की, मीनाकारी, नक्काशी और मोटिफ्स का इस्तेमाल होता है। वहीं स्टेटमेंट जूलरी का मकसद कम पीस में ज्यादा प्रभावी बनाना होता है। आज का ट्रेंड इन दोनों का ही मिला-जुला रूप है।

जूलरी अब सिर्फ एक्सेसरी नहीं, बल्कि आपकी पहचान और पर्सनैलिटी का एक्सटेंशन बन चुकी है

भूमि पेडनेकर : हेरिटेज और लेयरिंग का मिला-जुला खूबसूरत रूप

- भूमि पेडनेकर का नेकलेस हेरिटेज और लेयरिंग का खूबसूरत फ्यूजन यानी मिला जुला रूप है, जो टेंपल जूलरी से प्रेरित है। इसमें मीनाकारी और पारंपरिक मोटिफ्स की झलक साफ नजर आती है।
- रिजिड चोकर के साथ उनकी सिंपल गोल्ड चेन की लेयरिंग इस लुक को और खास बना रही है।
- यह कॉम्बिनेशन लुक को ज्यादा स्टाइलिश बनाता है।
- ब्राइडल और फेस्टिव लुक के लिए यह परफेक्ट चॉइस है
- यह लुक साबित करता है कि लेयरिंग से हेरिटेज जूलरी और भी ज्यादा आकर्षक बन जाती है।

> जूलरी सिर्फ पहनने की चीज नहीं है। यह आपकी पहचान और परंपरा को खूबसूरती से दिखाती है। हेरिटेज और स्टेटमेंट जूलरी में पुरानी आज का स्टाइल और पुरानी विरासत एक साथ नजर आते हैं।
>
> - तुलिका अग्रवाल, एक्सेसरीज डिजाइनर

शिल्पा शेट्टी: मिनिमल लेकिन स्ट्रॉन्ग स्टेटमेंट

- शिल्पा का स्लीक चोकर इस ट्रेंड का मॉडर्न वर्जन है।
- स्लिम और क्लीन डिजाइन इसे शानदार बना रहा है।
- ग्रीन स्टोन/एमरल्ड टोन ब्लैक आउटफिट के साथ यह शानदार कंट्रास्ट दे रहा है
- बिना ज्यादा जूलरी के भी यह पूरा लुक कैरी करता है
- यह स्टाइल बताता है कि कम जूलरी का भी बड़ा असर पड़ सकता है।
- ड्रेस हो या साड़ी, आप इस नेकलेस को ट्राई कर सकती हैं।

जेनेलिया डी'सूजा : लेयर्ड टेक्सचर

- जेनेलिया का यह लुक लेयर्ड टेक्सचर का रॉयल ट्रेंड है। उनका हैवी चोकर नेकलेस लेयर्स और मोटिफ्स से भरा हुआ है, जो पूरी तरह ट्रडिशनल फील देता है।
- गोल्ड बेस और कुंदन डिटेलिंग इसे और खास बना रही है।
- लेयर्ड टेक्सचर इस लुक को गहराई और चमक दे रहा है।
- साड़ी या लहंगे के साथ यह परफेक्ट एथनिक स्टाइल है।
- यह स्टाइल दिखाता है कि कैसे एक ही नेकपीस पूरे लुक को रॉयल बना सकता है।
- इसे पहनकर केवल एक पीस से ही आप ग्लैमरस के साथ स्टाइलिश भी नजर आ सकती हैं।

क्यों बढ़ रहा है ट्रेंड?

- सिंपल आउटफिट को भी बना देता है रॉयल।
- ब्राइडल और फेस्टिव आउटफिट के साथ इस जूलरी को खास पसंद किया जा रहा है।
- कम जूलरी में भी स्ट्रॉन्ग स्टाइल स्टेटमेंट देता है।
- ट्रडिशनल और मॉडर्न लुक का परफेक्ट तालमेल है।

कैसे करें स्टाइल?

- प्लेन या सॉलिड आउटफिट के साथ स्टेटमेंट जूलरी पेयर करें।
- एक समय में एक ही पीस को फोकस करें।
- डे लुक के लिए हल्का, नाइट या फेस्टिव समय के लिए हैवी ऑप्शन चुनें।

लाबुबु से आगे बढ़ा सिलेब्रिटी डॉल फैशन

फिलिपींस की मशहूर ऐक्ट्रेस मरियन रिवेरा को पसंद है क्राईबेबी डॉल

सरोज धूलिया

लाबुबु के बाद अब गुड़ियां सिर्फ खिलौना नहीं रहीं, बल्कि फैशन का हिस्सा बन चुकी हैं। 2025-26 में कई नई तरह की डॉल्स आई हैं, जिन्हें लोग बैग में लटकाकर, चाबी के गुच्छे के रूप में और फोटो में सजावट के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं। इन दिनों कई सिलेब्रिटीज इन्हें कैरी करते नजर आ रही हैं, जिससे इनका ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। खासतौर से जो चर्चा में हैं, उनमें खास हैं क्राइबेबी, स्कलपांडा, हैसिपुपु, ट्विंकल ट्विंकल, सॉनी एंजेल और सानरियो कैरेक्टर्स। यानी अब लोगों की अलग-अलग पसंद और स्टाइल के हिसाब से उनको कई ऑप्शन मिल रहे हैं।

स्टाइल और इमोशन का नया मेल

स्वाति तनेजा, बीकॉम स्टूडेंट (डीयू) कहती हैं कि नई डॉल्स में भावनाएं और स्टाइल दोनों साफ नजर आते हैं। ये आज की युवा पीढ़ी के मूड और पसंद से जुड़ती हैं, इसलिए अब ये सिर्फ खिलौना नहीं, बल्कि पर्सनल एक्सप्रेशन बन गई हैं।

फैशन स्टूडेंट रीटा मान कहती हैं कि आज डॉल्स सिर्फ क्यूट नहीं रहीं, बल्कि पहचान दिखाने का एक नया तरीका बन गई हैं। हर डॉल का स्टाइल और एक्सप्रेशन अलग कहानी कहता है।

थाईलैंड की ऐक्ट्रेस मिन मिचा इस डॉल वाले बैग को कैरी करती हैं

कई तरह के चेहरे

- **क्राइबेबी:** रोती हुई, इमोशनल एक्सप्रेशन। देखते ही कनेक्ट हो जाते हैं।
- **स्कलपांडा:** थोड़ा डार्क, आर्टिस्टिक और हटके वाइब देता है।
- **सॉनी एंजेल:** क्यूट और मासूम। सिर पर फल या जानवर की थीम इसे और यूनीक बनाती है।
- **सानरियो कैरेक्टर्स:** ऐसी कि जो बचपन की याद दिला दे।

> क्राइबेबी डॉल का इमोशनल लुक अब फैशन एक्सेसरीज का रूप लेता जा रहा है।
>
> - वैशाली सिंह, एक्सेसरी डिजाइनर

बिंदास BOL

फिल्मों में दिखाई जाने वाली हिंसा युवाओं पर क्या प्रभाव डालती है?

सवाल पर पाठकों की राय

फिल्मों में हिंसा किसी फिल्म का जरूरी भाग हो सकता है। देशभक्ति की फिल्मों में, जिसमें हमारे इतिहास और वर्तमान की झलक होती है या किसी गैंगस्टर के फिल्मांकन में हिंसा से दूरी नहीं बना सकते। जरूरी है थिएटर के काउंटर पर सख्ती हो, जिसमें फिल्म की रेटिंग और उम्र के अनुसार ही टिकट दी जाए और जो उसका पालन ना करे, उसपर कार्रवाई हो। सरकार को ओटीटी पर परोसे जाने वाले कॉन्टेंट और कस्टमर की उम्र को लेकर भी सख्त नियम बनाने चाहिए।

-सौरभ कुमार

फिल्मों में दिखाई जाने वाली हिंसा युवाओं पर गहरा प्रभाव डालती है। आज की बॉलिवुड फिल्मों में हिंसक दृश्यों को अक्सर ग्लैमराइज किया जाता है। रणवीर सिंह की धुरंधर इसका ताजा उदाहरण है। इसमें गर्दन तोड़ना, सिर काटना, पुलिस टॉर्चर और खून-खराबे के ग्राफिक सीन भरे पड़े हैं। ये दृश्य इतने इंटेंस हैं कि युवा उन्हें देखकर सोचते हैं कि हिंसा ही समस्या का एकमात्र समाधान है और फिर उन्हें धीरे-धीरे यही ठीक लगने लगती है। मगर हिंसा समाधान नहीं है।

-दिलीप मेवाड़ा

इन दिनों ट्रेंड में है सॉफ्ट कर्टेन बैंग्स वाला स्टाइलिश लुक

ananyapanday

आजकल हेयरस्टाइल में नेचुरल टेक्सचर और सॉफ्ट लेयर्स का ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। सिलेब्रिटीज भी ऐसे हेयर लुक्स अपना रही हैं, जो कम मेहनत में स्टाइलिश और फ्रेश दिखते हैं।

विस्पी कर्टेन बैंग्स के साथ मीडियम लेयर्स

अनन्या पांडे का मीडियम लेंथ लेयर्ड हेयरस्टाइल, जिसमें विस्पी कर्टेन बैंग्स हैं, यूथ के बीच इन दिनों काफी पॉपुलर हो रहा है। इसमें हल्के, बिखरे फ्रिंज, चेहरे को सॉफ्ट और फ्रेश लुक देते हैं। सॉफ्ट लेयर्स बालों में नेचुरल वॉल्यूम और टेक्सचर बनाए रखते हैं, जिससे बाल न तो भारी लगते हैं, न फ्लैट। यह स्टाइल थोड़ा मेसी और एयरी रखा जाता है, जो इसे चिक वाइब देता है। इस हेयरस्टाइल में नेचुरल वॉल्यूम और टेक्सचर को ज्यादा महत्व दिया जाता है। ओवल और हार्ट फेस पर ज्यादा सूट करता है, जबकि राउंड फेस पर भी फ्रंट लेयर्स इसे स्लिम इफेक्ट देते हैं। इसमें बालों को पूरी तरह परफेक्ट रखने की बजाय थोड़ा मेसी और एयरी रखना ही इसका असली आकर्षण है।

सॉफ्ट लेयर्ड कट विद कर्टेन बैंग्स

श्रद्धा कपूर के आगे के बाल, जो बीच से हल्के-हल्के खुले हैं, वह उनके चेहरे को सॉफ्ट फ्रेम देने में खासे काम आ रहे हैं। इस कट में बालों में हल्की लेयरिंग है, जिससे बालों को थोड़ा वेवी और मूवमेंट वाला फिनिश होता है। हेयर डिजाइनर्स का कहना है कि यह हेयरकट चेहरे को स्लिम और बैलेंस्ड दिखाता है। कुल मिलाकर, यह हेयरस्टाइल बहुत ही नेचुरल लगता है जिसे संभालने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती और यह ग्लैमरस लुक भी देता है। यही वजह है कि आजकल यह काफी ट्रेंड में है।

CCI NG 3.7 Product: HelloDelhiBS PubDate: 03-04-2026 Zone: HelloDelhi Edition: 1 Page: HDMMM User: chinmaya.tn@timesofindia.com Time: 04-02-2026 15:52 Color:

'32 सालों के बाद भी मैं लड़ ही रहा हूं कि बस काम कर सकूं'

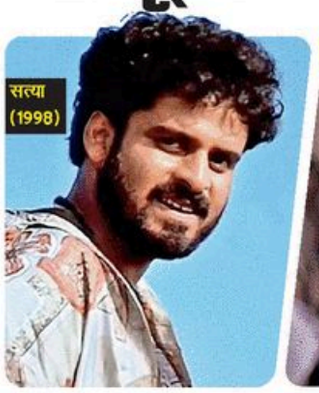

सत्या (1998)

मनोज बाजपेयी

गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012)

CONTINUED FROM 1

उसका सबसे बड़ा कारण यह रहा है कि मीडिया और दर्शक दोनों ही स्टार्स को सेलिब्रेट करने में बिजी रहे। उनको फर्क नहीं पड़ता कि एक बहुत ही टैलंटिड नवाजुद्दीन सिद्दीकी अपने करियर में 15 साल लेट हो गया। किसी को भी फर्क नहीं पड़ता है कि एक पंकज त्रिपाठी को देर हो गई। बहुत बाद में जाकर उसको वह मान्यता मिली या वह पहचान मिली। तब तक वह बहुत सारे रोल्स नहीं कर सकता था। लेकिन अच्छी बात यह है कि कम से कम जब भी वह आए, आपने उनके टैलंट को पहचाना। लेकिन यकीन मानिए देर हो गई। अगर 25 साल की उम्र में या 30 साल की उम्र में उनको वह पहचान या मान्यता मिली होती, तो बहुत सारे रोल थे, जो वे कर सकते थे। अब वे लोग उम्र के उस दौर में नहीं रहे।

हमारे हिंदुस्तान में टैलंट को कभी सेलिब्रेट ही नहीं किया गया। आप किस चीज को सेलिब्रेट कर रहे हैं? आज अगर आप सोशल मीडिया पर जाइए, तो जो फिल्म हिट हो रही है, उनकी परफॉर्मेंस की चर्चा नहीं होती। डायरेक्टर के ब्रिलियंट क्राफ्ट की चर्चा नहीं होती। कौन से ऐक्टर ने कितना बढ़िया काम किया, उसकी बात नहीं होती है। हम बात क्या करते हैं? आज 100 करोड़ पार कर गया, कल 150 करोड़ हो जाएगा, कोई दूसरा कहता है, नहीं 200 हो जाएगा। फिल्में नंबर्स के तौर पर सेलिब्रेट होती हैं या फिर बात होती है कि उस ऐक्टर का हेयरस्टाइल कितना बढ़िया है, उसने कौन से डिजाइनर की ड्रेस पहनी है। हम लोग फिल्मों के बारे में या किसी भी काम को लेकर, हम ना टैलंट की बात करते हैं, ना क्राफ्ट की बात करते हैं। हमने अपने आपको एक दर्शक के तौर पर, एक मीडिया के तौर पर इसी दायरे में रखा है।

क्या बॉक्स ऑफिस नंबर इतने कमाल हैं कि वह हर चीज तय करते हैं। मैं 32 साल से इंडस्ट्री में हूं। मेरी 8 फिल्में भी हिट नहीं हैं 32 साल में। तो फिर मैं कैसे हूं यहां पर! क्या यह ट्रेड की परिभाषा को, बॉक्स ऑफिस की परिभाषा को गलत साबित नहीं करता? यह गलत साबित करता है। 8 फिल्में भी हिट नहीं हैं मेरी सत्या से लेकर अब तक। तो बॉक्स ऑफिस नंबर कितने सही होते हैं? कहीं ना कहीं दर्शकों को या फिल्ममेकर्स को मनोज बाजपेयी चाहिए था। उनके कारण मैंने उनकी फिल्मों में काम किया।

अनुराग कश्यप ने मुझे गैंग्स ऑफ वासेपुर में लिया था, तो बॉक्स ऑफिस नंबर देखकर नहीं लिया था। मेरी काबिलियत देखकर लिया था उसने। राम गोपाल वर्मा के पास जब मुझे सत्या मिली थी, तब दर-दर भटकने वाला एक ऐक्टर था मैं। कभी किसी सीरियल के एपिसोड में दिख जाता था या किसी ऐक्टर या प्रोड्यूसर के दरवाजे पर दिखता था।

हमने बॉक्स ऑफिस नंबर्स को जिस तरह सेलिब्रेट करना शुरू किया है, यह अच्छी फिल्म इंडस्ट्री की निशानी नहीं है।

अगर किसी ट्रेड जर्नलिस्ट को मैं एक कहानी दूं, एक स्क्रिप्ट दूं और पूछूं कि कितने हजार करोड़ का या कितने 100 करोड़ का कलेक्शन यह फिल्म करेगी, तो कोई नहीं बता पाएगा। यह सब बताने लगते हैं जब फिल्म लग जाती है। इसका मतलब यह है कि सब मिथ्या है। यह सब बकवास है। जब दर्शक बदलना शुरू होंगे, तो फिल्में बदलना शुरू हो जाएंगी।

फिल्म की पहचान अगर पैसे से होती है, तो कलाकार की पहचान भी उस पैसे से होती है कि वह कितनी फीस मांग रहा है? आपने तब कहा था कि हमारे जैसे ऐक्टर्स की सुविधा यह है कि जब एक बड़े बजट की फिल्म हमें कास्ट करती है, तो हमारा साइड रोल होता है, तो हमें बड़ा पैसा नहीं मिलता। और जो फिल्म हमें लीड में कास्ट करती है, तो बेचारे बनाने वाले के पास पैसा नहीं होता। तो हमें चाहे कैसे भी, पैसा नहीं आता। क्या अब भी वही चल रहा है या कुछ बदला है?

एक हीरो ने बहुत अच्छी बात मुझसे कही थी। मैं नाम नहीं लूंगा। मैंने उससे कहा- भाई आप बहुत सिक्योर ऐक्टर हो यार। तो उन्होंने कहा कि यार बहुत सीधी सी बात है। तू बहुत बढ़िया काम कर रहा है। लेकिन अगर फिल्म हिट हो गई तो तेरे 400 रुपए बढ़ेंगे और मेरे 4 लाख रुपए बढ़ेंगे। तो आप समझ सकते हैं कि हम कहां पर हैं! इसी सिस्टम से लड़ाई करते हुए मुझे इतने साल हो गए हैं। और मैं बड़े फख्र के साथ कहता हूं कि बहुत सारी फिल्में, बहुत बड़ी-बड़ी फिल्में मेरे पास आईं और मैंने नहीं कीं, क्योंकि जो सेकेंड्री रोल्स कर रहे हैं, उनकी सेकेंड क्लास सिटीजन की पदवी है, चाहे वह सुविधा के स्तर पर हो, चाहे पैसे के स्तर पर। लेकिन इसी से मेरी लड़ाई थी। इसलिए मैंने कोशिश यही की कि पहले तो मैं करूं ही नहीं मल्टी-स्टारर, क्योंकि यह बेइज्जती सा लगता है। या फिर मैं सुनिश्चित करता हूं कि जो सुविधा किसी और को मिलेगी, वह मुझे भी मिलेगी। मैं सेल्फ रिस्पेक्ट वाला आदमी हूं।

आपकी इस जद्दोजहद की कहानी में मुझे आपकी फिल्म 1971 की याद आती है। आप ही के शब्द आपको पढ़कर सुनाता हूं: *'इसको देखने के बाद अनुराग कश्यप ने और मेरे बहुत सारे दोस्तों ने कहा कि यह कोई आर्मी फिल्म है, जो उन्होंने इतने समय में देखी है। और उसके बाद ना ही उस फिल्म की टिकटें बिकती हैं, ना उसको किसी अवॉर्ड फंक्शन में कोई तरजीह दी जाती है... मैं यह नहीं कहूंगा कि इसने मुझे तोड़ दिया, लेकिन हां, मुझे बहुत बड़ा सबक मिला था कि यार अगर अब कुछ भी करना पड़े, नाचना पड़े जुहू सर्कल पर जाकर, तो वह भी करेंगे। हमको मुकाबला तो करना ही पड़ेगा। हमारी जैसी फिल्म की कोई जानकारी नहीं मिलती है पब्लिक को और ना ही वे जानकारी लेने के लिए कहीं जाएंगे।'*

'ऐसे सिस्टम में विकल्प यही है कि आप बस लड़ते रहें'

1971 का हश्र बहुत बुरा हुआ। हम लोग प्रमोशन करने गए थे। हमको बोला गया कि लोग हैं नहीं थिएटर में, तो आप लोग बैठकर टिकट बेचोगे तो कुछ लोग आप से टिकट खरीदकर अंदर जाएंगे। आप अगर इस लाइन में हैं, तो हार मान कर क्या कर लोगे? हार मान लिया तो इसका मतलब है कि जाइए फिर। लेकिन यह विकल्प नहीं। विकल्प बस यही है कि आप लड़ते रहें। 1971 के बाद डायरेक्टर (अमृत सागर) इतने बुरे डिप्रेशन में गया और जब फिल्म को दो नैशनल अवॉर्ड्स मिले, तो मैंने उसे फोन किया, तो वह रोने लगा गुस्से में। सोचिए आप कितना टूट चुका था वह। महामारी के दौरान उसने मुझे कॉल किया और कहा, '1971 को तो कोई देख नहीं पाया। इसको हम लोग यूट्यूब पर डाल दें?' फिर उसने क्रिएटिव भेजा, मैंने खुद डाला, उसको प्रमोट किया और वह (इंडिया में) डिजिटल की पहली ब्लॉकबस्टर फिल्म बनी। उसे 30 मिलियन व्यूज मिले और वह भी बहुत कम समय में।

1971 (2007)

छोटी फिल्मों के लिए इंडस्ट्री में टिकना बहुत मुश्किल है। छोटी फिल्में अच्छा भी कर रही होती हैं, तो उनके शोज घटा दिए जाते हैं। मैं अपनी फिल्म अलीगढ़ हो, भोंसले हो, गली गुलियां हो, मैं खुद देखने नहीं जाऊंगा सुबह 9 बजे। तो मैं ऑडियंस से कैसे उम्मीद करूंगा कि जो एग्जीबिटर ने टाइम दिया है सुबह 9 बजे का मेरी छोटी सी फिल्म को, वह ऑडियंस देखने जाएगी! यह जो पूरा सिस्टम है, इसमें खामियां बहुत हैं। साथ ही यहां सिस्टम ऐसा है कि इसमें मुकाबला बहुत मुश्किल होता है। लेकिन मेरे बहुत सारे ऐसे ऐक्टर्स दोस्त हैं, उनको जब मैं यह कहता हूं कि तुम यह सब लड़ाई लड़ो, तो कहते हैं कि सर, हम लोग आपकी तरह नहीं हैं ना। लेकिन मैं इसलिए लड़ता हूं क्योंकि मैं गांव से आया था। और मैं सारा सामान लेकर आया था, तो अब वापस जा भी नहीं सकता हूं। मेरे पास और कोई दूसरा विकल्प नहीं था सिवाय लड़ने के और अपना टैलंट दिखाने के। कोविड के बाद यह पूरा सिस्टम जो है, वह हिल गया है, उसकी जड़ें हिल गई हैं, पावर सेंटर हिल गया है इंडस्ट्री में।

आपकी बात पर वापस लौटता हूं, लेकिन हमारे लिए तो लेट हो गया ना। मगर साथ ही साथ मैं यह देखता हूं कि कितने सारे टैलंट इस इंडस्ट्री ने बर्बाद कर दिए। कुछ शराब में बर्बाद हो गए, तो किसी ने अपनी लाइफ खत्म कर ली। जब मैं यह सब देखता हूं, तो खुद को खुशकिस्मत मानता हूं कि कम-से-कम ऊपर वाले ने, दर्शकों ने और कुछेक डायरेक्टर्स ने मुझे वह जगह दी, जिसका फल मुझे मिल रहा है। मुझे एक पोजिशन दिया, तो मैं शुक्रगुजार हूं। 1971 की बात करूं, तो उसका सफर जो है, वह बहुत ही प्रेरणादायक है। जब फिल्म रिलीज हुई, तो उसका पोस्टर तक डिस्ट्रिब्यूटर नहीं लगा पाया था किसी भी सिनेमा हॉल के बाहर। और मेरा मानना है या आप अनुराग कश्यप से जाकर भी पूछिए, जिन लोगों ने भी फिल्म देखी थी उस समय, उन्होंने कहा था यह हिंदुस्तान में बनने वाली बेस्ट आर्मी फिल्म है। लेकिन फिल्म का हश्र बहुत बुरा हुआ।

यह लड़ाई आपके डायरेक्टर के लिए मुश्किल साबित हुई?

हां, 1971 के बाद मेरा डायरेक्टर (अमृत सागर) इतने बुरे डिप्रेशन में गया, नैशनल अवॉर्ड के लिए अप्लाई करने की घोषणा हुई, तो मैं अपने दोस्त की पार्टी में था वहीं दिल्ली में। वहां एक अधिकारी मुझसे मिले। उन्होंने कहा कि मनोज जी, आपकी अगर कोई फिल्म है तो भेज दो सबमिशन के लिए। मैंने अपने डायरेक्टर दोस्त को इसके लिए फोन किया तो उसने मुझसे कहा, 'मुझसे आगे से ऐसा मजाक मत करना यार।' डांट दिया उसने मुझे, वह इतने डिप्रेशन में था। मैंने उसके पिता को कहकर उस फिल्म को सबमिट कराया। जब 1971 को दो नैशनल अवॉर्ड्स (बेस्ट फिल्म और बेस्ट ऑडियोग्राफी) मिले, तो मैंने अपने डायरेक्टर को फोन किया, तो वह रोने लगा गुस्से में कि तू मेरे साथ इतना बुरा मजाक क्यों कर रहा है। सोचिए आप, कितना टूट चुका था वह! यह दिखाता है कि हमारे सिस्टम में कितनी खराबी है। हमारे सिस्टम में खामियां हैं जहां हम कुछ सेलिब्रेट नहीं करते, अच्छा काम प्रमोट नहीं करते। पर्सनल लेवल पर मीडिया का एक-एक आदमी, ऑडियंस का एक-एक जागरूक आदमी तय करता है तो यह बहुत कुछ बदल सकता है। अकेले ऐक्टर और क्रिएटिव लोग नहीं बदल सकते हैं। वे एक ही चीज कर सकते हैं, टिके रहें। लेकिन मैं आपको बताऊं हम यहां टिके हुए हैं, बिना किसी के सपोर्ट के हम टिके हुए हैं। 32 सालों के बाद भी मैं खुद यहीं हूं, काम कर रहा हूं, हर समय लड़ रहा हूं ताकि काम कर सकूं।

'बाहुबली एक दिन की कहानी नहीं'

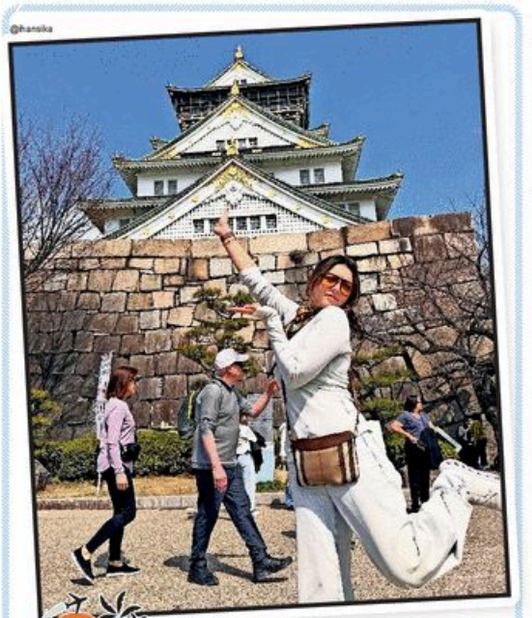

बाहुबली: द कन्क्लूजन के एक सीन में सुपरस्टार प्रभास

रितिक जोशी

एस.एस. राजमौली की बाहुबली और RRR जैसी हिट फिल्मों में कैमरे के पीछे की भूमिका निभाने वाले सिनेमैटोग्राफर के.के. सेंथिल कुमार बीते दिनों IFFD में शामिल होने पहुंचे। वहां उन्होंने बताया कि राजमौली पहले ऐसे डायरेक्टर थे जिन्होंने मुझसे कहा कि मैं एक विजुअल फिल्म बनाना चाहता हूं। बकौल सेंथिल, 'हमारी पहली बातचीत में ही उन्होंने कहा कि मैं एक विजुअल फिल्म बनाना चाहता हूं। यह मेरे कानों को संगीत जैसा लगा।' उन्होंने यह भी बताया कि बाहुबली का प्री-प्रोडक्शन लगभग डेढ़ साल चला। उन्होंने कहा, 'बाहुबली की दुनिया बनाने में हमें करीब डेढ़ साल लगे, यह सिर्फ एक दिन की कहानी नहीं थी।'

> हमें बाहुबली की दुनिया बनाने में करीब डेढ़-दो साल लग गए, यह सिर्फ एक दिन की कहानी नहीं थी

TRIPPIN'

हंसिका मोटवानी अपनी फैमिली के साथ जापान घूमने गईं। हंसिका ने अपनी इस ट्रिप की कुछ फोटोज भी सोशल मीडिया पर साझा की हैं। इन तस्वीरों में वह कहीं जापान की सड़कों पर घूमती हुई नजर आ रही हैं, तो कहीं पर किसी पुरानी इमारत के सामने पोज दे रही हैं।

बैटमैन 2 के लिए तैयारियां शुरू करने जा रहे हैं रॉबर्ट

द बैटमैन के सीन में रॉबर्ट पैटिंसन

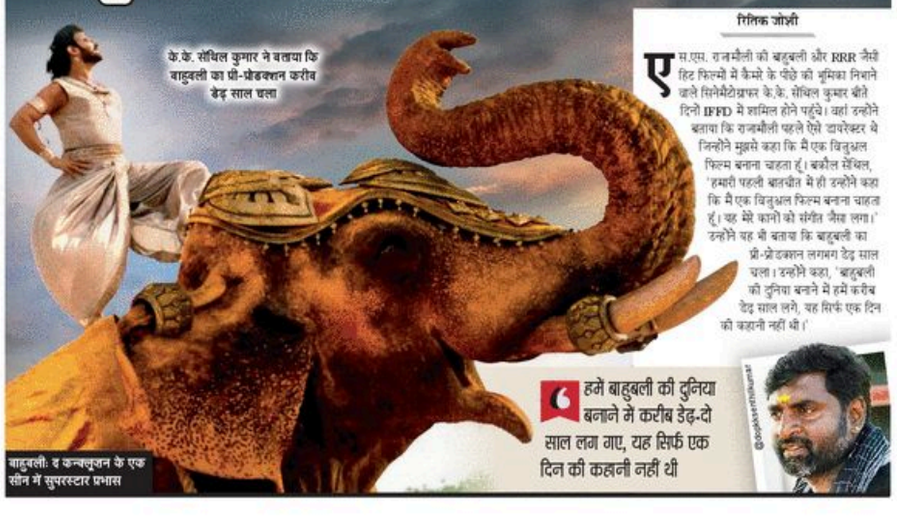

जब से रॉबर्ट पैटिंसन बैटमैन के किरदार में नजर आए हैं, तभी से फैंस को इसके सीक्वल का इंतजार है। अब फैंस की यह ख्वाहिश जल्द पूरी होने जा रही है क्योंकि फिल्म द बैटमैन (2022) में लीड रोल निभाने वाले रॉबर्ट पैटिंसन ने खुद कन्फर्म किया है कि वह एक हफ्ते के भीतर फिल्म के सीक्वल के लिए तैयारी शुरू करने जा रहे हैं। उन्होंने बैटमैन 2 की स्क्रिप्ट को लेकर अपनी खुशी भी जाहिर की और बताया कि वह कहानी और फिल्म के विजन से बेहद प्रभावित हैं। बकौल रॉबर्ट, 'सच कहूं, तो बैटमैन 2 की स्क्रिप्ट वाकई कमाल की है। यह बहुत ही शानदार लिखी गई है। इसमें कुछ ऐसे बड़े प्रयोग किए जा रहे हैं, जो दर्शकों को हैरान कर देंगे। डायरेक्टर मैट रीव्स ने इस बार कहानी को एक अलग ही लेवल पर पहुंचा दिया है।'

> बैटमैन 2 की स्क्रिप्ट कमाल की है। मैं फिर से उस बैट-सूट में लौटने के लिए काफी उत्साहित हूं

'आज भी खुद को खल्लास गर्ल सुनकर खुशी होती है'

OTT पर कंटेंट बहुत बेबाक होता है। यहां आप बिना किसी समय की पाबंदी के, असली और गहरी कहानियां कह सकते हैं। यह आजादी सब कुछ है

ईशा कोप्पिकर

ऋचा शुक्ला

बीते दिनों जब एक इवेंट में ईशा कोप्पिकर पहुंचीं तो मंच पर आते ही सभी ने खल्लास गर्ल का शोर मचाना शुरू कर दिया। अपनी वही पुरानी मुस्कान के साथ ईशा ने कहा, 'सच कहूं तो, यह सुनकर आज भी बहुत खुशी होती है। खल्लास गाना (2002) हर किसी के लिए एक यादगार पल था। जब यह रिलीज हुआ था, तब लोगों की दीवानगी देखने लायक थी। आज भी लोग मुझे देखकर खल्लास गर्ल कहकर बुलाते हैं। हर कलाकार को दर्शकों से ऐसा प्यार नहीं मिलता, इसलिए यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात है।'

'OTT पर मिलती है काम की आज़ादी'

ईशा का कहना है कि OTT कलाकारों के लिए आजादी लेकर आया है। साउथ और बॉलिवुड की फिल्मों व वेब सीरीज में काम कर चुकीं ईशा कोप्पिकर कहती हैं, 'हर प्लेटफॉर्म ने मुझे कुछ नया सिखाया है। साउथ इंडियन फिल्मों में अनुशासन और काम के प्रति समर्पण कमाल का है। बॉलिवुड ने मुझे पहचान और शोहरत दी। वहीं, OTT पर कंटेंट बहुत बेबाक है। यहां आप किसी तरह की समयसीमा में बंधे बिना, असल और मुश्किल कहानियां दिखा सकते हैं। एक कलाकार के तौर पर यह आजादी बहुत मायने रखती है। ओटीटी आपको इस तरह की आजादी प्रदान कर रहा है।'

'बदलाव लाने के लिए राजनीति में आई थी'

एक समय ईशा ने राजनीति में भी हाथ आजमाया था। 2019 में राजनीति से जुड़ने के सवाल पर ईशा ने कहा, 'मेरा मकसद ग्लैमर या पावर पाना नहीं था, बल्कि समाज में योगदान देना था। मैं महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर अपनी आवाज उठाना चाहती थी। आज भी मैं सक्रिय हूं और आसपास की चीजों पर नजर रखती हूं। भविष्य में कोई बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी या नहीं, यह तो वक्त बताएगा। लेकिन मैं स्पष्ट तौर पर यह कह सकती हूं कि मेरी नीयत साफ है।'

'मुश्किल वक्त शिक्षक से ज्यादा सिखाता है'

ईशा का मानना है कि मुश्किलें ही इंसान को गढ़ती हैं। उन्होंने कहा, 'मुश्किल दौर आपको किसी भी गुरु या किताब से ज्यादा सिखाता है। मेरे करियर और जीवन में ऐसे कई दौर आए, जब चीजें आसान नहीं थीं और मुझे अपनी जगह बनाए रखने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्हीं पलों ने मुझे मजबूती और एक स्पष्ट सोच दी। आज मैं जो कुछ भी हूं, अपने संघर्षों की वजह से ही हूं। यह कहना गलत नहीं होगा कि महिलाएं सिर्फ मुश्किलों से बचती नहीं हैं, बल्कि उनसे लड़कर खुद को बदल लेती हैं। अपना मुकाम महिलाएं इंडस्ट्री में खुद बना रही हैं। इसकी फेहरिस्त काफी लंबी है।'

Photo:Social Media

कंपनी के खल्लास गाने ने ईशा को काफी शोहरत दी

'फिट रहना मुझे सुकून देता है'

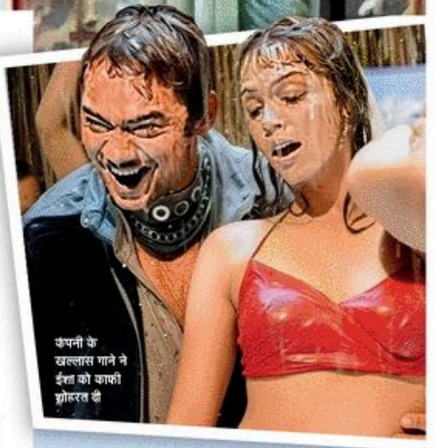

अपनी फिटनेस और बेटी के साथ बनाई जाने वाली रील्स पर बात करते हुए ईशा ने कहा, 'फिटनेस मेरे लिए बहुत जरूरी है। यह मेरे मेंटल सुकून का जरिया है। जहां तक सब कुछ संभालने की बात है, तो महिलाओं में एक साथ कई काम करने की खूबी होती है। मैंने समय के साथ यह समझा है कि पहले फैमिली और हेल्थ होना चाहिए, फिर बाकी सब।'

Photos:Social Media

महाकाल के दरबार पहुंचे अक्षय कुमार ने की विशेष पूजा

अक्षय कुमार हाल ही में भगवान शिव की शरण में पहुंचे। वह उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन करने पहुंचे थे जहां उनके साथ उनकी सास डिंपल कपाड़िया और अभिनेता टाइगर श्रॉफ भी नजर आए। अक्षय कुमार सफेद कुर्ता-पायजामा में बेहद सादगी भरे अंदाज में दिखे। माथे पर तिलक लगाए उन्होंने बाबा महाकाल के दर्शन किए और पूजा-अर्चना की। हालांकि इस दौरान मंदिर परिसर में मौजूद फैंस की भारी भीड़ में उन्हें देखने के लिए खासा उत्साह दिखा।

सोशल मीडिया पर सामने आए विडियो में अक्षय कुमार पूजा करते हुए संकल्प लेते नजर आ रहे हैं। उनके हाथ में जल है और पंडित मंत्रोच्चार कर रहे हैं। दर्शन के बाद अक्षय ने कहा कि उन्होंने देश, परिवार और सभी की खुशहाली के लिए प्रार्थना की है। बकौल अक्षय, उनकी कामना है कि देश लगातार आगे बढ़ता रहे। गौरतलब है कि अक्षय कुमार आने वाले दिनों में फिल्म वेलकम टु द जंगल में नजर आएंगे। इस फिल्म में उनके साथ सुनील शेट्टी और दिशा पाटनी भी नजर आएंगी।

राजकुमार ने शुरू किया 'दादा' की बायोपिक पर काम

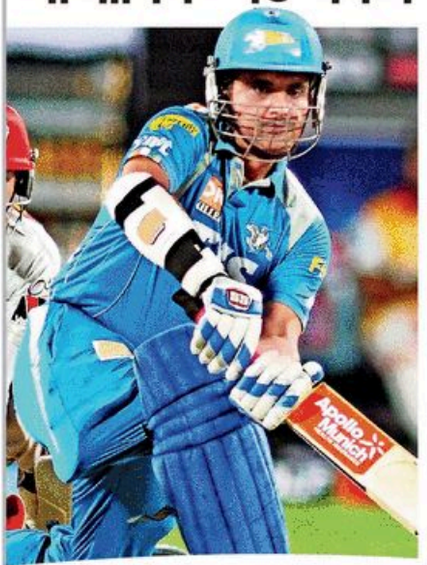

भारतीय क्रिकेट के दिग्गज सौरव गांगुली की जिंदगी पर बन रही फिल्म 'दादा: द सौरव गांगुली स्टोरी' की शूटिंग शुरू हो चुकी है। इस फिल्म के लीड ऐक्टर राजकुमार राव ने खुद यह जानकारी फैंस के साथ साझा की। राजकुमार राव ने इस फिल्म के मुहूर्त सेरेमनी की कुछ झलकियां शेयर करते हुए एक क्लैपर और सौरव गांगुली स्टैंड की एक फोटो शेयर की। इन फोटोज के साथ उन्होंने लिखा, 'और यहीं से शुरुआत होती है... एकमात्र दादा से।' इसी सौरव गांगुली स्टैंड की फोटो फिल्म के डायरेक्टर विक्रमादित्य मोटवानी ने भी शेयर की है। फिलहाल फिल्म की बाकी स्टारकास्ट का खुलासा नहीं किया गया है।

'दादा: द सौरव गांगुली स्टोरी' की शूटिंग शुरू हो चुकी है और राजकुमार राव ने खुद इसकी जानकारी सोशल मीडिया के जरिये साझा की है

@rajkummar_rao

सौरव गांगुली स्टैंड की एक फोटो

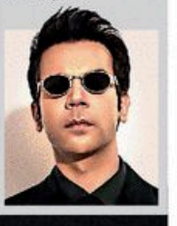

@janhvikapoor

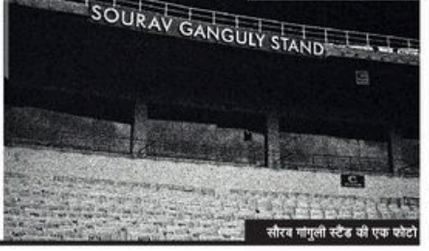

शाहिद-कृति की मूवी में दिखेंगी जाह्नवी!

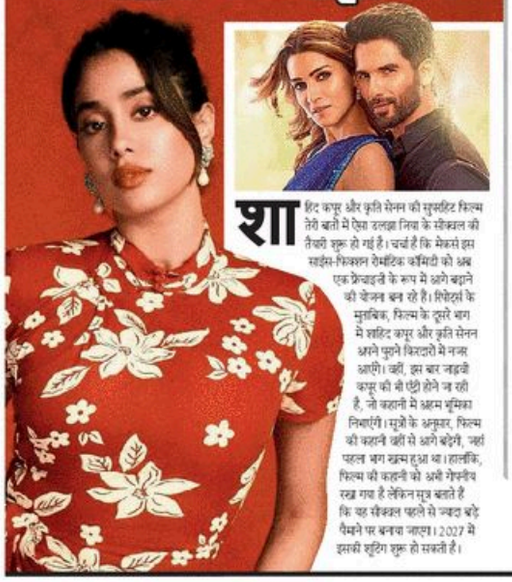

शाहिद कपूर और कृति सेनन की सुपरहिट फिल्म तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया के सीक्वल की तैयारी शुरू हो गई है। चर्चा है कि मेकर्स इस साइंस-फिक्शन रोमांटिक कॉमेडी को अब एक फ्रेंचाइजी के रूप में आगे बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म के दूसरे भाग में शाहिद कपूर और कृति सेनन अपने पुराने किरदारों में नजर आएंगे। वहीं, इस बार जाह्नवी कपूर की भी एंट्री होने जा रही है, जो कहानी में अहम भूमिका निभाएंगी। सूत्रों के अनुसार, फिल्म की कहानी वहीं से आगे बढ़ेगी, जहां पहला भाग खत्म हुआ था। हालांकि, फिल्म की कहानी को अभी गोपनीय रखा गया है लेकिन सूत्र बताते हैं कि यह सीक्वल पहले से ज्यादा बड़े पैमाने पर बनाया जाएगा। 2027 में इसकी शूटिंग शुरू हो सकती है।

एनरिके के दिल में बस गई भारतीय संस्कृति

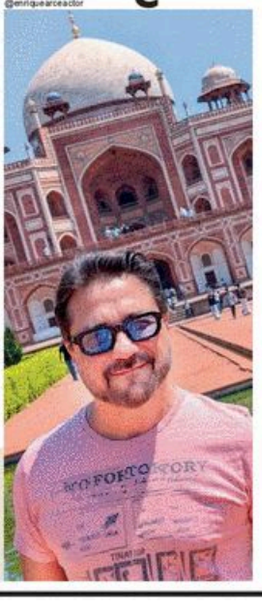

मशहूर हाइस्ट फेम स्पैनिश ऐक्टर एनरिके आर्से ने हाल ही में दिल्ली दर्शन किए और भारतीय संस्कृति, इतिहास और फिल्मों को करीब से अनुभव किया। अपने इस खास सफर को उन्होंने एक अविस्मरणीय यात्रा बताया। एनरिके ने अपने दिल्ली दर्शन की कुछ फोटोज सोशल मीडिया पर पोस्ट कीं जिसमें वह हुमायूं का मकबरा और गांधी स्मृति जैसी जगहों पर नजर आ रहे हैं। इन फोटोज के साथ उन्होंने लिखा, 'भारत एक अद्भुत देश है, जहां सुंदरता और विविधता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। मेरी सात दिन की इस यात्रा में मैंने तमाम एक्टिविटीज, इवेंट्स देखे और काफी कुछ नया सीखने को मिला।' एनरिके ने आगे लिखा, 'मेरी इस यात्रा के दौरान मुझे भारत, खासकर दिल्ली और मुंबई में कई नए दोस्त मिले। भारत का खाना, यहां की कला और संस्कृति बहुत ही शानदार है। यहां का अनुभव मेरे मन को अंदर तक छूने वाला रहा। भारत से लौटने के बाद भी इस यात्रा की यादें मेरे साथ बनी हुई हैं।' उन्होंने कहा कि वह भविष्य में फिर से भारत आना चाहेंगे और इस विशाल देश को और करीब से जानना चाहेंगे। अंत में उन्होंने भारत और दिल्ली का आभार जताते हुए नमस्ते भारत कहा।

@enriquearceactor

भारत एक अद्भुत देश है, जहां सुंदरता और विविधता का अनोखा संगम देखने को मिलता है

NOTE : -

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS
[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:-https://t.me/Newspaper_pdf_bot
Or type in Search box of Telegram
@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel
BACKUP GROUP LINK
https://t.me/joinchat/5P9EL1JaqoYzNTI1

Hindi-English News Paper Website:- onlineftp.in